'हरियाणा के करनाल जिले से गांधी नेशनल मेमोरियल फंड एकत्रित करने में बाबू मूलचंद जैन की भूमिका'

अमरजीत
शोध छात्र- इतिहास विभाग
शहीद मंगल पाण्डेय राजकीय
महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
मेरठ (उ॰ प्र॰)

प्रो॰ अनीता गोस्वामी
विभागाध्यक्ष- इतिहास विभाग
शहीद मंगल पाण्डेय राजकीय
महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
मेरठ (उ॰ प्र॰)

Email- asindhu187@gmail.com

शोध सारांश :-

हरियाणा के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी एंव गांधीवादी नेता बाबू मूलचंद जैन जी का जन्म रोहतक जिले की गोहाना तहसील के सिकंदरपुर माजरा नामक गांव में 15 अगस्त 1915 ई॰ को हुआ। इनके पिताजी का नाम श्री मुरली लाल जैन और माता जी का नाम श्रीमती धनकौर देवी था। महात्मा गांधी जी के विचारों से प्रभावित होकर ये 1937 ई॰ में कांग्रेस के सदस्य बने तथा स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गांधीजी की हत्या के पश्चात कांग्रेस कार्यसमिति ने समस्त देश से 'गाँधी नेशनल मेमोरियल फंड' एकत्रित करने की घोषणा की। जिसके तहत बाबू मूलचंद जैन जी को करनाल जिला समिति का महासचिव नियुक्त किया गया। जिनके नेतृत्व में करनाल जिले से लगभग पांच लाख रुपए का धन संग्रह किया गया। समस्त भारत से एकत्रित 'गांधी नेशनल मेमोरियल फंड' का उपयोग अखिल भारतीय स्तर पर रचनात्मक गतिविधियों को आगे बढ़ाने तथा महात्मा गाँधी जी के लेखन और शिक्षाओं को प्रकाशित करने एवं संग्रहालय बनाए जाने के लिए किया गया।

मुख्य शब्द :- **रचनात्मक, संगठन, अभियान, भ्रान्ति, संग्रह, प्रतिष्ठा आदि।**

प्रस्तावना :-

गांधीजी की हत्या 30 जनवरी 1948 ई॰ कर दी गई। उन के अंतिम संस्कार के समय दिल्ली में बड़ी संख्या में लोगों की भीड़ में बाबू मूलचंद जैन और उन की पत्नी भी शामिल हुई। उन की आंखों में आंसु थे। घर वापस आने के बाद भी कई दिनों तक वे दुखी रहें। उन का मानना था की समस्त देश गांधी जी के बिना अनाथ हो गया हैं। उन्होंने कहा की ऐसा

महामानव, ऐसा विश्व मानव हमने खो दिया, जिसकी पूर्ति कोई नहीं कर सकता।□ बाबू जी ने अपने बाकी बचे जीवन को गांधी जी के अधूरे कार्य को पूर्ण करने के लिए समर्पित कर दिया।[1] गांधी जी की मृत्यू से भारत ही नहीं अपितु समस्त विश्व को गहरा सदमा लगा। वे हिंदु मुस्लिम एकता एंव सत्य अहिंसा के समर्थक थे, तथा समस्त विश्व में मानवतावादी नेता के रूप जाने जाते थे। ब्रिटिश शासन के विरुद्ध भारत की आजादी के लिए उन्होंने अहिंसक विरोध का मार्ग अपनाया। उन की निर्मम हत्या से देश में दंगे फैलने का अंदेशा था□

संभावित हिंसा से बचने के लिए कांग्रेस कार्य समिति की बैठक 6 फरवरी 1948 ई॰ की शाम को नई दिल्ली में आयोजित की गई। इस बैठक में कांग्रेस कार्य समिति के सदस्यों के अतिरिक्त श्रम मंत्री श्री जगजीवन राम, खाद्य मंत्री श्री जयराम दास दौलतराम, आचार्य जे. बी. कृपलानी, श्री देवदास गाँधी आदि शामिल हुए। इस बैठक में सर्वसम्मति से दो प्रस्ताव जारी किए गए। पहला प्रस्ताव महात्मा गाँधी की याद में सभी कांग्रेस कार्य कार्यकर्ताओं को सांप्रदायिक सद्भाव बनाये रखने के लिए निर्देशित किया गया।[2] क्योंकि गांधी जी की हत्या से समस्त देश में अशांति व्याप्त थी सम्भावित हिंसा से बचने के लिए कांग्रेस कार्य समिति ने जनसाधारण को निर्देश दिए कि महात्मा गाँधी जी हिंसा में विश्वास नहीं रखते थे। इस लिए जन साधारण से संयम बनाए रखने का अनुरोध किया गया।

दूसरा प्रस्ताव अखिल भारतीय स्तर पर रचनात्मक गतिविधियों को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से एक राष्ट्रीय स्मारक निधि के निर्माण से संबंधित था। इस नीधि का उपयोग भी भिन्न-भिन्न भाषाओं में महात्मा गाँधी को लेखन और शिक्षाओं को एकत्र करने, संरक्षित करने और प्रकाशित एवं संग्रहालय बनाए जाने के लिए किया जाना था। जहाँ गांधीजी से जुड़ी वस्तुओं को सुरक्षित किया जा सके। कांग्रेस कार्यसमिति ने भारत के लोगों से इस राष्ट्रीय स्मारक निधि में योगदान देने की अपील की और सुझाव दिया कि प्रत्येक व्यक्ति को कम से कम 10 दिन की आय गांधी नेशनल मेमोरियल फंड के लिए दान देना चाहिए। कांग्रेस कार्य समिति ने कांग्रेस अध्यक्ष को इस नीधि में एकत्रित करने के लिए एक अंतरिम समिति की नियुक्ति सहित सभी आवश्यक कदम उठाने के लिए अधिकृत किया।[3] गांधी जी की मृत्यु के उपरान्त उनके जीवन से प्रेरणा लेते हुए कांग्रेस कार्य समिति ने सांप्रदायिक सद्भावना बनाऐ रखने का प्रयास किया और गांधी जी के प्रिय रचनात्मक कार्यों की और लोगों का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया गया।

कांग्रेस कार्य समिति की और से कांग्रेस अध्यक्ष पट्टाभि सीतारमैया ने कहा की जिले से एकत्रित की गई राशि का 75% उसी जिले में खर्च करने का प्रयास किया जाएगा।[4]

इसी अभियान के तहत गांधी नेशनल मेमोरियल फंड एकत्रित करने के लिए 'करनाल जिला समिति' का गठन 30 मई 1948 ई॰ को किया गया। यद्यपि पंजाब प्रांतीय समिति की और से देरी के कारण 'करनाल जिला समिति' का गठन देरी से हुआ जब 'गाँधी नेशनल मेमोरियल फंड कमेटी' भारत के धन संग्रह करने के अवसर पर राष्ट्रीय सप्ताह मनाने की अपील की थी तो करनाल जिला समिति के पास रसीद बुक या अधिकृत संग्रहकर्ता नहीं थे तो बाबूजी ने केंद्रीय समिति दिल्ली को तार भेजकर सहायता की अपील की।[5] करनाल जिला समिति का गठन पंजाब के अन्य जिलों की अपेक्षा देरी से हुआ। बाबूजी ने इसके लिए विशेष प्रयास किये। धन संग्रह करने के लिए आवश्यक सामग्री प्राप्त करने के लिए बाबू जी ने केन्द्रीय समिति के नेताओं को अनुस्मारक भी भेजे।

करनाल जिला समिति के संगठन में लगभग 55 सदस्य थे और जिले के प्रत्येक थाने में कम से कम दो प्रभावशाली सदस्य थे। इसके अतिरिक्त प्रमुख कांग्रेस कार्यकर्ता तथा करनाल के प्रमुख लोगों को भी शामिल किया गया। जिला समिति के सदस्यों को तहसील थाना और जेल समितियों को संगठित करने के लिए नियुक्त किया गया। इनमें से कई थाना, तहसील और जेल समितियों के गठन की देखरेख जिला समिति के पदाधिकारियों द्वारा की गयी। जेल व थाना समितियों में गैर कांग्रेसी लोगों को भी पदाधिकारी चुना गया। ये समितियां ही मुख्य रूप से धन संग्रह करती थी। साथ ही गांधीजी के विचारों का प्रचार भी करती थी। कई जगहों पर गांव और शहरों में भी समितियां बनाई गई।[6] बाबू मूलचंद जैन को करनाल जिला समिति का महासचिव नियुक्त किया गया।[7] डां. अमरनाथ को उप प्रधान, श्री इकबाल चंद को सचिव और लाला हरस्वरूप को कोषाध्यक्ष बनाया गया।[8]

बाबू जी के योग्य निर्देशन में ही करनाल जिला समिति ने गाँधी नेशनल मेमोरियल फंड एकत्रित करना आरंभ किया। करनाल जिला समिति का संगठन बाबू मूलचंद जैन की कुशल संगठन क्षमता का प्रतीक था। जिसमें कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ-साथ करनाल के प्रमुख व्यक्तियों का सहयोग प्राप्त किया गया।

श्री सचदेवा, मुख्य सचिव, पूर्वी पंजाब ने पंजाब प्रांत के सभी डिप्टी कमिश्नर और सभी पुलिस अधीक्षक को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा महात्मा गाँधी राष्ट्रीय स्मारक निधि के लिये चंदा इकट्ठा करने के अभियान को सफल बनाने के लिए चंदा एकत्रित करने वाली

भारतीय कांग्रेस समिति और जिला कांग्रेस समितियों का सहयोग करने का अनुरोध किया गया।[9] करनाल जिले में कृषि विभाग के सभी कर्मचारियों ने 10 दिन का वेतन गाँधी नेशनल मेमोरियल फंड समिति करनाल को दान कर दिया।[10] गांव में कई स्थानों पर समाज सेवियों और पुलिस अधिकारियों ने मिलकर दान एकत्रित करने में सहयोग किया। बाबूजी ने राजस्व, पंचायत और स्कूल स्टाफ से भी सहयोग करने की प्रार्थना की।[11] बाबूजी ने कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ-साथ करनाल के प्रमुख व्यक्ति व सरकारी कर्मचारियों का भी इस पुन्य कार्य में सहयोग प्राप्त किया। सरकारी कर्मचारियों में भी विशेष उत्साह दिखाई दिया उन्होंने धन संग्रह करने में सहयोग करने के साथ ही अपने वेतन का कुछ भाग भी दान में दिया।

लेकिन करनाल जिले के उच्च अधिकारियों में फैली भ्रांति के कारण अनुमानित लक्ष्य को पूरा करना कठिन हो गया। इसलिए बाबू मूलचंद जैन ने करनाल जिले के उच्च अधिकारियों में फैली भ्रांति को दूर करने के लिए उन्हें सम्बोधित करते हुए लिखा की करनाल में राजस्व कर्मचारी, पुलिस तथा जी.एन.एम. आदि ने फंड संग्रह करने में सहयोग दिया। करनाल समिति ने गाँधी नेशनल मेमोरियल फंड के लिए बीस लाख रुपये एकत्रित करने का लक्ष्य रखा। लेकिन जिले के कुछ अधिकारियों के अनुसार करनाल जिले से दो या तीन लाख रुपए ही इकट्ठा करना काफी था। इस धारणा के तहत तहसीलदार और उनके अधीन पटवारी और थानेदार इस काम को पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत करते थे, परंतु वे गांव वालों को सिर्फ दो रुपए प्रतेक घर से चंदा देने के लिए प्रेरित करते थे। इस लिए कांग्रेस कार्यकर्ताओं और करनाल फंड समिति के सदस्यों के लिए अनुमानित लक्ष्य को पूरा करना कठिन हो गया।

बाबूजी ने करनाल जिले के लोक सेवकों को बीस लाख रुपए एकत्र करने के उच्च आंकड़े को ध्यान में रखते हुए काम करने का अनुरोध किया।[12] गांधी जी की मृत्यू के पश्चात उनकी शिक्षाओं और उनके जीवन से जुड़ी वस्तुओं को संरक्षित करने के लिए गांधी नेशनल मेमोरियल फंड एकत्रित किया जा रहा था। ताकि उन के विचारों को संरक्षित करके संग्रहालय का निर्माण करवाया जा सके। इस कार्य के लिए अधिक धन की आवश्यकता थी। इसलिए बाबूजी अधिक से अधिक दान प्राप्त करना चाहते थे।

बाबू मूलचंद जैन ने कहा की "जब हम गाँधी राष्ट्रीय स्मारक निधि में योगदान करते हैं या दूसरों से योगदान करने के लिए अनुरोध करते हैं, तो हम गाँधी जी के चतुर्मुखी संदेश को याद करते हैं और उसका पालन करते हैं, तथा अपने आंतरिक शत्रुओ अर्थात अशिक्षा, गरीबी, बीमारी और सांप्रदायिकता के खिलाफ़ राष्ट्र की लड़ाई में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।

इस प्रकार हम न केवल गाँधी जी की स्मृति में योगदान देते हैं, जिसके समर्पण का ऋण हम कभी नहीं चुका सकते बल्कि हम एक महायज्ञ में भी भाग लेते हैं, जो हमारे देश को मजबूत करेगा और रामराज्य की स्थापना में सहयोग करेंगे।[13]

गांधी जी स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख नेता थे। वे भारत ही नहीं अपितु विश्व के महान नेता थे। यहां तक की 1920 से 1947 ई॰ के काल को गांधी युग के नाम से जाना जाता हैं। वे भारत में जाती, धर्म, भाषा आदि भेदभावों को समाप्त कर भारत के समस्त नागरिकों की समानता पर आधारित रामराज्य की स्थापना करना चाहते थे।

डिप्टी कमिश्नर करनाल ने बाबू मूलचंद जैन जी को 29 जुलाई 1948 ई॰ को पत्र लिखा, जिसमें 30 जुलाई 1948 ई॰ तक करनाल कार्यालय में गाँधी राष्ट्रीय स्मारक निधि जिला कांग्रेस कमेटी करनाल द्वारा एकत्रित की गई राशि के बारे में जानकारी देने के लिए अनुरोध किया गया।[14]

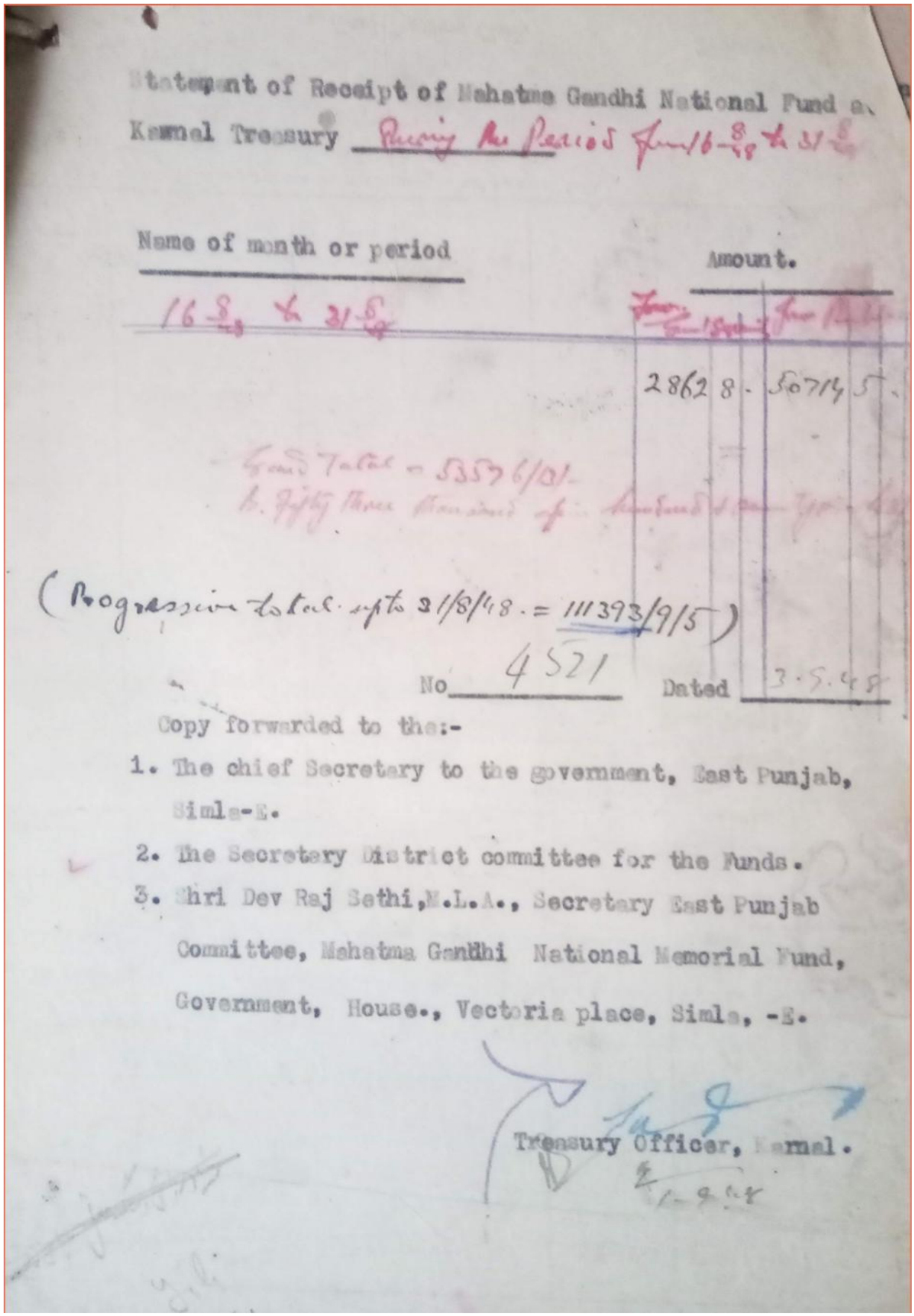

Statement of Receipt of Mahatma Gandhi National Fund at Karnal Treasury During the Period from 16-8-48 to 31-8-48

Name of month or period	Amount.	
16-8-48 to 31-8-48	2862 8 -	50714 5 -

Grand Total – 53576/13/-
Rs. Fifty three thousand [illegible]

(Progressive total upto 31/8/48. = 111393/9/5)

No 4521 Dated 3.9.48

Copy forwarded to the:-

1. The chief Secretary to the government, East Punjab, Simla-E.
2. The Secretery District committee for the Funds.
3. Shri Dev Raj Sethi, M.L.A., Secretary East Punjab Committee, Mahatma Gandhi National Memorial Fund, Government, House., Vectoria place, Simla, -E.

Treasury Officer, Karnal.

महात्मा गांधी नेशनल मेमोरियल फंड करनाल समिति द्वारा 16 अगस्त 1948 ई॰ से 31 अगस्त 1948 ई॰ तक 1,11,393 रुपए की धन राशि एकत्रित की गई। जिसकी जानकारी करनाल समिति के वित्त विभाग की रसीद नम्बर 4521 से मिलती हैं। इस की प्रतिलिपि

मुख्य सचिव पूर्वी पंजाब, गांधी नेशनल मेमोरियल फंड समिति सचिव तथा श्री देवदास सेठी एम.एल.ए.पंजाब सचिव को प्रेषित की गई।[15]

गाँधी राष्ट्रीय स्मारक निधि, करनाल जिला समिति की बैठक 12 दिसंबर 1948 ई॰ को बाबू मूलचंद जैन की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि गांधी नेशनल मेमोरियल फंड एकत्रित करने में सहयोग करने वाले श्रमिकों को प्रमाण पत्र दिए जाए। जिनके नाम तहसील समितियों द्वारा प्रमाणित किए गए थे।[16] करनाल जिला समिति ने गांधी नेशनल मेमोरियल फंड एकत्रित करने के लिए करनाल जिले के सरकारी कर्मचारी, प्रमुख व्यक्ति, एवं श्रमिकों से सहयोग प्राप्त किया तथा उन्हें उत्साहित करने के लिए करनाल समिति की और से प्रमाण पत्र आदि भी दिये गये

गाँधी राष्ट्रीय स्मारक फंड के लिए प्रति व्यक्ति धन संग्रह करने में पूर्वी पंजाब पूरे भारत में सबसे अधिक धन संग्रह करने वाला प्रान्त था और करनाल जिला पूरे पंजाब में सबसे अधिक संग्रह करने वाला जिला था। करनाल जिले से लगभग पांच लाख का योगदान प्राप्त हुआ। करनाल जिले की दस लाख जनसंख्या में से लगभग तीन लाख शरणार्थी थे। करनाल जिले के प्रत्येक निवासी को इस संग्रह पर गर्व था और उन्हें लगता था कि उन्होंने दानवीर कर्ण की प्रतिष्ठा को बनाए रखा। जिनके नाम पर करनाल जिला मुख्यालय की स्थापना की गई।[17] करनाल के लोगों महात्मा गांधी जी द्वारा की गई राष्ट्र की सेवा से परिचित थे। इसलिए उन्होंने गांधी नेशनल मेमोरियल फंड के लिए अधिक से अधिक दान दिया। करनाल में शरणार्थियों की संख्या भी बहुत अधिक थी तथा उन का पुनर्वास भी अभी तक नहीं हो सका था। उन में से अधिकतर दान देने की हालत में नहीं थे। लेकिन फिर भी बाबू मूलचंद जैन और उन के साथियों ने गांव-गांव घुम कर गांधी जी के संदेश को आम जनता तक पहुंचाया तथा उन्हें अधिक से अधिक दान देने के लिए प्रेरित किया। इसलिए करनाल जिला पंजाब के जिलों मे सबसे अधिक धन संग्रह करने वाला था।

बाबू मूलचंद जैन ने कहा की हम में से बहुत से लोग स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग नहीं ले सके, लेकिन आम जनता और सरकारी कर्मचारियों को भारत की स्वतंत्रता को मजबूत बनाने और शांति के इस महान कार्य में आवश्य भाग लेना चाहिए।[18]

निष्कर्ष :- बाबू मूलचंद जैन को हरियाणा का गाँधी उपनाम से भी जाना जाता है। उन्होंने गांधी जी के सिद्धांत जैसे सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, सत्याग्रह, अपरिग्रह आदि का अपने जीवन में पूर्ण रूप से पालन किया। गांधी जी की मृत्यू से उन्हें गहरा सदमा लगा। कांग्रेस कार्य समिति ने उन के लेखन और शिक्षाओं को संरक्षित करने के लिए संग्रहालय बनाए जाने का प्रस्ताव पास किया। जिसके लिए अत्यधिक धन की आवश्कता थी। बाबू जी के नेतृत्व में करनाल से लगभग पांच लाख रुपए □गांधी नेशनल मेमोरियल फंड□ के लिए दान के रूप में प्राप्त किये गये।

संदर्भ सूची

1. जैन स्वतंत्र, राजनीति के संत स्वतंत्रता सेनानी बाबू मूलचंद जैन, आरसी पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2017, पृष्ठ 19
2. अमृत बाजार पत्रिका, 7 फरवरी 1948, पृष्ठ 1
3. वही, पृष्ठ 8
4. गोपीचंद भार्गव, प्रीमियर पूर्वी पंजाब, पत्र, 14 मई 1948 ई॰
5. बाबू मूलचंद जैन पत्र, डां. राजेंद्र प्रसाद, अध्यक्ष गांधी नेशनल मेमोरियल फंड समिति, भारत, 10 जनवरी 1949, पृष्ठ 1
6. वही, पृष्ठ 2
7. बाबू मूलचंद जैन पत्र, डिप्टी कमिश्नर करनाल, 8 जुन 1948 ई॰
8. बाबू मूलचंद जैन, महासचिव जिला कांग्रेस कमेटी करनाल, पत्र , डिप्टी कमिश्नर करनाल, दिनांक 15/ 1948 ई॰
9. श्री सचदेवा पत्र, मुख्य सचिव, पूर्वी पंजाब, 16 अप्रैल 1948 ई॰
10. बलदेव सिंह, अतिरिक्त सहायक कृषि निदेशक, करनाल पत्र, 4 मई 1948 ई॰
11. बाबू मूलचंद जैन, महासचिव जिला कांग्रेस कमेटी करनाल, पत्र , डिप्टी कमिश्नर करनाल, दिनांक 15/ 1948 ई॰
12. बाबू मूलचंद जैन पत्र, डिप्टी कमिश्नर करनाल, 8 जुन 1948 ई॰
13. बाबू मूलचंद जैन पत्र, महासचिव गांधी नेशनल मेमोरियल फंड करनाल, 24 जुलाई 1948 ई॰
14. डिप्टी कमिश्नर करनाल पत्र, बाबू मूलचंद जैन, 29 जुलाई 1948 ई॰
15. गांधी नेशनल मेमोरियल फंड करनाल, वित्त विभाग, रसीद नम्बर 4521

16. उपरोक्त, बाबू मूलचंद जैन पत्र, डां. राजेंद्र प्रसाद, 10 जनवरी 1949 ई॰ पृष्ठ 3

17. वही, पृष्ठ 1

18. बाबू मूलचंद जैन पत्र, महासचिव गांधी नेशनल मेमोरियल फंड करनाल, 24 जुलाई 1948 ई॰